महाराज कृष्ण भरत की कविताएँ

चेहरे पर चेहरा

फेसबुक !
शायद तुम सब कुछ जानते हो
जो भी घटता है मानव के साथ
या फिर जो घट रहा होता है
पर क्या सही में तुम
सब कुछ जानते हो
एक बात स्वीकार करनी ही पड़ेगी
तुम्हारा कद रिश्तों से भी बड़ा है।

घर से किसी गंतव्य के लिए
प्रस्थान करने वाले
किसी और स्थल से चुपके
लाइव हो जाते हैं
आजकल बच्चे रिश्तों से अधिक
फेसबुक में
सुरक्षित पाते हैं
संवाद हो न हो
लाइक्स का अंक गणित
मायने रखता है।

फेसबुक !
तुम महान हो महान
तुम्हारी कीर्ति के झंडे
जग ज़ाहिर है
इन दिनों
दिल बजे यां न बजे
अंगूठा बजना चाहिए।

अतीत के झरोखे से

कभी कभी अतीत
ऐसे ही बोल उठता है
जैसे बरसों के बिछड़े
किसी अनजान सफ़र पर
चलते हुए टकराए
जैसे आस मिलन की हो
और मीत खो जाए
जैसे वापस आ पाना संभव न हो
कोई तार मिल जाए।

यह वक्त की लड़ियां हैं श्रीमन् !
टूटती बिखरती हैं
फिर जुड़ जाती हैं
वक्त तो अपना इतिहास
लिख देता है

वहीं कहीं धुंधलके में
होती हैं हमारी स्मृतियां
सब कुछ रेत की तरह छूट जाता है।

हम क्या कहें

समय ने हमें छला है
या
हम समय की धड़कनों को
महसूस नहीं कर सके
जो जहां था जैसा था
हमने किसी को छुआ नहीं
किसी को कुछ कहा नहीं
चलते गए इस पार उस पार
हमें क्या पता था
किसने हमें रोका, किस ने हमें टोका।

नदी की धार हो
या पर्वतों की श्रृंखलाएं
कंदराएं
खाइयां
समुद्र का गरजता वेग
हमने तो प्यार ही बांटा
अंधेरा हो या प्रकाश
हर जगह आवाज़ को गले लगाया है

पलक पांवड़े बिछाएं हैं
हमें क्या पता
पानी बह चुका है
सब कुछ ढह चुका है।

कंदराएं
खाइयां
पट चुकी हैं
समंदर का वेग शांत हो गया है
किस को आवाज़ दें
पर्वतों से टकरा कर
वापस लौट आती हैं
हम जहां कल थे
हम जहां कल होंगे
हम तो वही हैं जहां थे
जहां हमें होना था
बस मील के पत्थर बदल चुके हैं
नेम प्लेटें लग चुकी हैं
अंदर आना मना है।

-महाराज कृष्ण भरत